

राजनीतिशास्त्र के आईने में *राग दरबारी* के पचास साल

पंकज कुमार झा
कस्तूरी दत्ता

श्रीलाल शुक्ल की कालजयी रचना *राग दरबारी* के पचास वर्ष होने पर दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग ने 20-30 जनवरी, 2018 को एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी 'पॉलिटी एज़ फ़िक्शन, फ़िक्शन एज़ रियलिटी : फ़िफ़्टी ईयर्स ऑफ़ *राग दरबारी*' आयोजित की। दो दिन और आठ सत्रों वाली इस गोष्ठी के सूत्रधार थे राजनीतिशास्त्र के विद्वान सत्यजीत सिंह।

I

पहले दिन का शुरुआती सत्र '*राग दरबारी* : करप्शन, इन्क्वलिटी ऐंड एडमिनिस्ट्रेटिव थियरी' के इर्द-गिर्द था। सत्र के अध्यक्ष शक्ति सिन्हा का कहना था कि साठ का दशक दस राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की पराजय के लिए तो जाना ही जाता है, लेकिन वह *राग दरबारी* में व्यक्त विकासवादी राज्य की विफलता को भी इंगित करता है। सिन्हा के मुताबिक़ 1960 के शिवपालगंज से अब तक भारतीय गाँव में काफ़ी तब्दीली आयी है। उसकी जटिलताएँ बढ़ी हैं। दूसरी ओर लोकतांत्रिक क्रांति की संकल्पना लगातार मज़बूत हुई है। आज शहर की तुलना में गाँव और अमीर की तुलना में ग़रीब-गुरबों में लोकतंत्र के प्रति एक गहरी आस है। यही कारण है कि शिवपालगंज एक ग्रामीण व्यवस्था के प्रतीक के रूप में सदैव प्रासंगिक मालूम पड़ता है।

कोलम्बिया युनिवर्सिटी के विद्वान फ़िलिप ओल्डेनबर्ग ने अपना पर्चा 'द फ़ोकलोर ऑफ़ करप्शन इन यूपी विलेजेज़ इन फ़िक्शन ऐंड फ़ील्डवर्क' में जानकारी दी कि 'मैंने भी उत्तर प्रदेश में गाजीपुर, बहराइच, मोहनलालगंज व मेरठ में चकबंदी विषय पर 1984 व 1992 में शोध किया। वहाँ जिस तरह से नौकरशाहीकृत व्यवस्था व संरचनाएँ कार्य कर रही थीं वह काफ़ी कुछ ठीक वैसा ही था जैसा कि शिवपालगंज में दिखाया गया है।' *राग दरबारी* की तारीफ़ करते हुए ओल्डेनबर्ग ने अपनी प्रस्तुति तीन भागों में की : पहला हिस्सा उत्तर प्रदेश में चकबंदी पर किये शोध के ज़रिये दिखाता था कि किस तरह से भू-स्वामित्व के वितरण में भ्रष्टाचार व्याप्त है। दूसरा हिस्सा शिवपालगंज में भ्रष्टाचार व सत्ता के आपसी संबंधों की पड़ताल करता था। तीसरे हिस्से में उत्तर प्रदेश के गाँव व राजनीति में हाल के वर्षों में आये बदलावों को रेखांकित किया गया था। यह बदलाव पंचायती राज का नया स्वरूप व राजनीतिक परिवर्तन, जैसे बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी के उभार के रूप में दिखाया गया था।

इसी सत्र में '*राग दरबारी* की भूमि में पानी की समस्या' शीर्षक से अपना पर्चा पढ़ते हुए विनिता माथुर ने कहा कि 'सामाजिक शोध व विकास के सवाल को साहित्यिक रचनाओं व अन्य विधाओं द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है। इस श्रेणी में *राग दरबारी* का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।' अपने पर्चे में उन्होंने पानी के संकट को विभिन्न सामाजिक विविधताओं, जल संसाधन संबंधी आँकड़ों और प्रशासन व परम्परागत संस्थाओं की भूमिका के संबंध में देखा।

सत्यजीत सिंह ने 'रिविज़िटिंग एडमिनिस्ट्रेटिव थियरी फ्रॉम विलेज इण्डिया' में वुडरो विल्सन के प्रशासन-राजनीति विभाजन संबंधी पूर्वग्रह को *राग दरबारी* के संदर्भ में ख़ारिज करते हुए कहा कि व्यष्टिगत राजनीति (माइक्रो पॉलिटिक्स) पर गहन विश्लेषण करने के लिए हमारे समक्ष श्रीलाल शुक्ल की कालजयी रचना *राग दरबारी* से बेहतर और कुछ नहीं हो सकता। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि 'भारतीय प्रशासनिक अध्ययन ने अब तक *राग दरबारी* को एक फ़िक्शन के रूप में देखा है न कि यथार्थ के एक बिम्ब के रूप में। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मौजूदा प्रशासनिक संरचना राजनीति-प्रशासन अलगाव से अलग कोई अन्य विश्लेषणात्मक नज़रिया प्रस्तुत नहीं करती। यह एक ऐसा दोष है जिसे यह गोष्ठी दूर करने की कोशिश करना चाहती है। प्रशासनिक सिद्धांत के नज़रिये से देखें तो यह कहना लाज़िमी होगा कि शुक्ला की यह रचना प्रशासन संबंधी मील के पत्थर के रूप में सामने आती है।

दूसरा सत्र 'पॉलिटिक्स, इंस्टीट्यूशन ऐंड विलेज इण्डिया' पर था जिसकी अध्यक्षता राजनीतिशास्त्री उज्ज्वल कुमार सिंह ने की। उन्होंने कहा कि '*राग दरबारी* में शिक्षा, अदालतों, कोआपरेटिव से जुड़े नैरेटिव कहीं न कहीं यथार्थ और आपके बीच स्थित भारत की संकल्पना को समझने में मदद करते हैं।' उत्तर प्रदेश पर विशेष शोध करने वाली वरिष्ठ विद्वान सुधा पै ने *इनड्यूरिंग रेलेवेंस ऑफ़ राग दरबारी — डेमॉक्रैटिक पॉलिटिक्स ऐंड ब्यूरोक्रेटिक फ़ंक्शनिंग इन उत्तर प्रदेश* में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित सर्वोच्च नौकरशाही (आईएएस) की कार्यप्रणाली और स्वतंत्रता के उपरांत उसके बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप को रेखांकित करते हुए 1950-80 में नौकरशाही की सापेक्षिक स्वायत्तता से प्रतिबद्ध नौकरशाही में आये बदलाव को रेखांकित किया। उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि इस रूप में पचास साल बाद भी *राग दरबारी* की प्रासंगिकता दिखाई पड़ती है। शैलजा फ़िनेल ने अपने पर्चे 'नेटवर्क, नैरेटिव ऐंड विलेज लाइफ़-रिविज़िटिंग मॉडल्स ऑफ़ रूरल डिवेलपमेंट थ्रू एन इंस्टीट्यूशनल लेंस' में दिखाया कि किस प्रकार *राग दरबारी* भारतीय गाँव को समझने-बूझने का एक प्रेक्षण स्थल है। इसके माध्यम से शिवपालगंज के पचास साल बाद के भारतीय गाँवों में हो रहे तकनीकी बदलाव व युवा पहचान के विषय पर एक गहरी समझ बनाने में विशेष रुचि प्रदर्शित करते हुए पड़ताल की कि किस तरह से ग्रामीण इलाक़े में मोबाइल क्रांति और उससे पूरी सामाजिक संरचना में बदलाव आया है। अपने पंजाब व तमिलनाडु में किये गये अध्ययन के आधार पर उन्होंने कहा कि चार दशकों में तकनीकी क्रांति ने जहाँ एक तरफ़ कृषि व्यवस्था में परिवर्तन किया है, वहीं दूसरी तरफ़ मोबाइल

फ़ोन की क्रांति ने ग्रामीण युवा को एक अलग पहचान प्रदान की है। ये परिघटनाएँ *राग दरबारी* के समय से बिल्कुल भिन्न हैं। मसलन, *राग दरबारी* में जब गाँव के थाने का ज़िक्र किया गया है तो वहाँ कैमरा, शीशा, कुत्ता, वायरलेस सभी का अभाव दिखाया गया है।

विबोध पार्थसारथी ने 'अ डिस्टोपियन पब्लिकनेस ऑर जेनेसिस ऑफ़ ऑवर मीडिया इकॉनॉमी' शीर्षक से अपनी प्रस्तुति में संचार माध्यम को राजनीति से जोड़ते हुए *राग दरबारी* को जाँचने-परखने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि *राग दरबारी* ने जो पब्लिकनेस या सार्वजनिकता के स्वरूप को विभिन्न सामाजिक रूप में प्रस्तुत करता है चाहे वह व्यवसायिक प्रचार हो, सार्वजनिक सेवा से जुड़ी मुहिम हो, सरकारी पहल हो अथवा प्रचार तंत्र। शिवपालगंज में प्रस्तुत डिस्टोपियन पब्लिकनेस की अवधारणा मौजूदा हिंदुस्तान में बदल चुकी है। महत्त्वपूर्ण है कि विज्ञापन, कैंपेन व प्रचार आज केवल सार्वजनिकता को ही प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि इससे मीडिया की केंद्रीय विशेषता जैसे उच्च आधुनिकता से भी निर्देशित होती है। मेखला कृष्णामूर्ति ने 'रूरल एजेंट, मार्केट ऐंड कैरेक्टर फ्रॉम हरदा मण्डी' में शिवपालगंज से अपने शोध क्षेत्र हरदा मण्डी की तुलना प्रस्तुत की। मेखला के अनुसार जिस तरह से शिवपालगंज शहर के नज़दीक एक क़स्बानुमा गाँव है, उसी तरह से हरदा भी गाँव के नज़दीक स्थित मण्डी है। जिस तरह से शिवपालगंज में कोआपरेटिव की गतिविधियों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है उसी तरह से हरदा मण्डी का भी कोआपरेटिव से गहरा संबंध है। जिस तरह से शिवपालगंज में एकाध को छोड़ कर स्त्री चरित्रों का अभाव है उसी तरह से हरदा मण्डी में मर्दों का ही नियंत्रण है। जिस तरह से शिवपालगंज में भाँग व नशे से जुड़े बहुत सारे उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं उसी तरह मैंने भी हरदा मण्डी में सुना कि भाँग और पान के बिना तो मण्डी बनती ही नहीं है। मेखला का विचार था कि अगर गाँव व इन शहरी मण्डियों का अध्ययन करना है तो एक एथ्नोग्राफ़र को अपने शोध-क्षेत्र से आलोचनात्मक दूरी के स्थान पर क्रिटिकल प्रोक्सिमिटी रखनी होगी। तब जा कर शिवपालगंज से आगे के ग्रामीण अध्ययन को सूक्ष्मता से समझा जा सकेगा।

पहले दिन भोजन के बाद का सत्र 'डिस्ट्रिक्ट, लोकल पॉलिटिक्स ऐंड पॉलिसी' विषय पर था जिसका संयोजन राजनीतिशास्त्री रेखा सक्सेना ने किया। उन्होंने *राग दरबारी* को समकालीन राजनीति, स्थानीय राजनीति, ज़िला व तहसील स्तरीय राजनीति को समझने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में पेश किया। इस सत्र में तीन वरिष्ठ अध्येताओं पंपा मुखर्जी (पंजाब युनिवर्सिटी), यामिनी अय्यर (अध्यक्ष, सेंटर फ़ॉर पॉलिसी रिसर्च), सरोज गिरी (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अपने शोध पत्र पढ़े। पंपा मुखर्जी ने '*क्लासिकल टेक्स्ट ऐंड कंटेम्पररी रियलिटीज़ : अंडरस्टैंडिंग डिवलपमेंट थ्रू राग दरबारी* ' में कहा कि *राग दरबारी* के शिवपालगंज की बानग़ी हम आज के दैनिक जीवन में मौजूद कशमकश के संदर्भ में भी देख सकते हैं। शिवपालगंज में जिस तरह का ग्रामीण परिवेश, संस्थागत क्रियाकलाप, लोकल गवर्नेंस एवं भ्रष्टाचार का स्वरूप दिखाई पड़ता है वह समकालीन हिंदुस्तानी समाज व राजनीति एवं विकास के विमर्श समझने-बूझने एवं अनुभव करने के लिए ख़ासा ज़रूरी है। उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि उनका पर्चा उपन्यास में प्रस्तुत राज्य की भूमिका, उसकी विकासवादी छवि एवं उसकी समकालीन प्रासंगिकता पर भी विस्तार से चर्चा करता है। यामिनी अय्यर ने 'द पोस्ट ऑफ़िस पैराडॉक्स : अण्डरस्टैंडिंग द स्टेट फ्रॉम द फ्रंटलाइंस' में राज्य की नीतियों को ज़मीनी स्तर पर मौजूद समस्याओं व चुनौतियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया। उन्होंने बिहार, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, और हिमाचल प्रदेश में किये गये अध्ययनों में प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी ब्लॉक स्तरीय नौकरशाही एवं उससे जुड़ी पारदर्शिता व जवाबदेही के मुद्दों को रेखांकित किया। प्रोफ़ेसर सरोज गिरी ने अपने पर्चे 'फ्रॉम अपराईज़िंग टू मूवमेंट : दलित रेसिस्टेंस इन गुजरात' में कोच व मेहसाना से धनेरा के बीच की पदयात्रा एवं उसमें उभरे दलित प्रतिरोध को विस्तार से समझाया।

चाय के बाद के सत्र का विषय 'वेलफ़ेयर, विकास ऐंड लोकलिज़म' था। इस सत्र की अध्यक्षता

राजनीतिशास्त्री श्रीप्रकाश सिंह ने किया। इस सत्र में सौरभ गुप्ता (आईआईएम, उदयपुर) व राजीव वर्मा (युनिवर्सिटेट होहेनहिम) ने साझा शोध पत्र पढ़ा जिसमें बिहार में समन्वित बाल विकास सेवाओं (आईसीडीएस) के विशेष संदर्भ में गवर्नेंस व सेवा डिलिवरी की स्थिति को रेखांकित किया गया था। उन्होंने प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों की समीक्षा प्रस्तुत की जिसके तहत केंद्र व राज्य सरकार की रपट, अख़बारी डॉक्यूमेंट, आईसीडीएस संबंधी दस्तावेज़ व पॉलिसी गाइड-लाइन के साथ-साथ आँगनबाड़ी सेंटर में रखे रजिस्टर का भी अध्ययन शोध सामग्री के रूप में किया गया था। अपने पर्चे में उन्होंने आईसीडीएस सेवा में मौजूद भ्रष्टाचार के कारणों को रेखांकित किया। उसके साथ पेरोमा रे (स्कूल शिक्षिका, झारखण्ड), ने 'गवर्नेंस संबंधी औपचारिक व अनौपचारिक संस्थाओं से महिलाओं की पारस्परिक क्रिया' में *राग दरबारी* के माध्यम से संस्थाओं की कार्यप्रणाली की समीक्षा की और कुछ महत्त्वपूर्ण केंद्रीय संस्थाओं, मसलन पंचायत, शिक्षण संस्थाएँ, परिवार व पुलिस पर विशेष रूप से फ़ोकस किया। उन्होंने दिखाया कि इन संस्थाओं की आपसी अंतर्क्रिया किस तरह से एक शक्ति-संबंध का सृजन करती है जिससे समाज का कमज़ोर शोषित तबक़ा प्रभावित होता है। उनके पर्चे में औपचारिक संस्थाएँ (पुलिस, पंचायत, व स्कूल) व अनौपचारिक संस्थाएँ (परिवार) की आपसी अंतर्क्रिया में महिलाओं की स्थिति को भी रेखांकित की गयी थी। मानस्वी कुमार (आईएएस व डॉक्टोरल उम्मीदवार, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अपना शोधपत्र 'ऊर्जा उपलब्धता और गवर्नेंस : स्थानीय ऊर्जा संबंधी समस्या' विषय पर अपना पर्चा पढ़ा। कुमार ने *राग दरबारी* में प्रस्तुत हिंदी पट्टी की ग्रामीण स्थिति के आधार पर मोतीचूर टोला, सीतामढ़ी, रामपुर गाँव में बिजली-वितरण में चल रहे राजनीतिक खेल को प्रस्तुत किया।

II

सेमिनार के दूसरे दिन सुबह का सत्र 'लिटरेचर, पॉलिटिक्स ऐंड मार्जिंस' शीर्षक पर आधारित था। जिसकी अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ अध्येता एच.एम.संजीव ने पूछा कि *राग दरबारी* जैसा साहित्य जब गाँव की राजनीति व वंचितों के सवालों को पुख़्ता तरीक़े से प्रस्तुत करता है तो क्या समाज की सच्चाई के दर्पण के रूप में फ़िक्शन या उपन्यास राजनीतिक सिद्धांत के विकल्प का रूप धारण कर सकता है? इस सत्र में राजनीतिक सिद्धांतकार गोपाल गुरु ने कहा कि *राग दरबारी* के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक सच्चाई को समझने का एक नया मार्ग दिखाई पड़ता है। 'उपन्यास में प्रस्तुत प्रभावशाली भाषा का प्रयोग काफ़ी आस बँधाता है और उस भाषा का प्रयोग जब शोषित दलित समाज से आने वाला पात्र मनोहर या लंगड़ करता है तो उसकी ख़ूबसूरती और बढ़ जाती है। गोपाल गुरु का महत्त्वपूर्ण अवलोकन यह था कि हॉब्स, लॉक और रूसो जैसे सामाजिक समझौते के पैरोकारों के लिहाज़ से राज्य को एक ज्ञानमीमांसीय संदर्भ में समझा जा सकता है, जबकि *राग दरबारी* में जिस तरह का राज्य है उसे सत्तामीमांसा (ओंटोलॉजी) के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रख्यात अर्थशास्त्री ज्याँ द्रेज़ ने सवाल उठाया कि क्या शिवपालगंज सार्वजनिक रूप से मौजूद है? इसका उत्तर तलाशते हुए उन्होंने कहा कि 'मैं शिवपालगंज तो नहीं गया परंतु 1980 में उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित गाँव पालमपुर में शुरुआती दशक व नब्बे में महत्त्वपूर्ण शोध किया। मैंने अपने शोध के आधार पर पाया कि किस तरह से सार्वजनिक सेवाओं व सार्वजनिक संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ मौजूद हैं। इस लिहाज़ से मैंने अपने शोध में सामाजिक-आर्थिक विषमता रेखांकित की। इन सबके साथ-साथ मैं जाति आधारित विषमता व जेण्डर आधारित विषमता को भी देखता हूँ।' गुंजल मुण्डा (शोधार्थी) ने अपने पर्चे में कहा कि किसी भी सामाजिक आंदोलन में युवा या जनजातीय युवा को परिवर्तन के वाहक के रूप में देखा जा सकता है। इसे बिरसा मुण्डा के आंदोलन व योगदान के संदर्भ में देखा जा सकता है। उनका पर्चा झारखण्ड जैसे जनजातीय क्षेत्र में इन युवाओं की बढ़ती भूमिकाओं को रेखांकित करता था।



गोपाल गुरु ने कहा कि *राग दरबारी* के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक सच्चाई को समझने का एक नया मार्ग दिखाई पड़ता है। उपन्यास में प्रस्तुत प्रभावशाली भाषा का प्रयोग काफ़ी आस बँधाता है और उस भाषा का प्रयोग जब शोषित दलित समाज से आने वाला पात्र मनोहर या लंगड़ करता है तो उसकी ख़ूबसूरती और बढ़ जाती है। गोपाल गुरु का महत्त्वपूर्ण अवलोकन यह था कि हॉब्स, लॉक और रूसो जैसे सामाजिक समझौते के पैरोकारों के लिहाज़ से राज्य को एक ज्ञानमीमांसीय संदर्भ में समझा जा सकता है, जबकि *राग दरबारी* में जिस तरह का राज्य है उसे सत्तामीमांसा (ओंटोलॅजी) के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।

दूसरे दिन चाय के बाद के सत्र का विषय था 'टेक्स्ट ऐंड कंटेम्परेरी पॉलिटिक्स' जिसकी अध्यक्षता करते हुए राजनीतिशास्त्री मधुलिका बनर्जी ने कहा कि साहित्य समकालिकता को प्रस्तुत करता है। उन्होंने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि पहली दफ़ा राजनीतिशास्त्र का सेमिनार हिंदी उपन्यास को केंद्र में रख कर आयोजित किया जा रहा है। यह इस बात को भी प्रमुखता देता है कि सामाजिक विज्ञान की परंपरागत ज्ञानमीमांसा के विपरीत उभर रही नवीन ज्ञानमीमांसा में भाषा का सवाल क्यों इतना अहम होता जा रहा है। इस नवीन ज्ञानमीमांसा में विविध संवेदनशीलताओं और ज्ञान को अपनाने के प्रति एक विशेष आग्रह दिखाई पड़ता है। इस सत्र के दौरान उल्का अंजारिया (ब्रैंडेरिश युनिवर्सिटी) ने '*राग दरबारी* की समकालीनता' नामक पर्चे को दो हिस्से में बाँट कर प्रस्तुत किया। पहले हिस्से में *राग दरबारी* के पचास वर्ष बाद भी उसकी प्रासंगिकता व उसमें निहित समकालीनता के तत्त्वों को परखते हुए उपन्यास में निहित 'उल्टी बातों' को प्रमुखता से रेखांकित किया। मसलन, 'दुकान कहीं नहीं थी और सब जगह थी। गर्द भरी सड़क के किनारे नीम का एक पेड़ था। उसी के नीचे नाई बोरा बिछा कर बैठा था। उसके आगे एक ईंट गड़ी हुई थी। ईंट के ऊपर सनीचर न बैठा था, न खड़ा था, सिर्फ़ था।' उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की अस्सी और नब्बे के दशक में मौजूद शैली व विषयवस्तु के विपरीत *राग दरबारी* में मौजूद औपचारिक, शैलीगत व विषयगत विशेषताएँ इसे अलग स्थान प्रदान करती हैं। उल्का का कहना था कि *व्हाइट टाइगर, गॉड ऑफ़ स्मॉल थिंग्ज़, अ सूटेबल बॉय* जैसे नये अंग्रेज़ी साहित्य में दिखने वाले नव-प्रांतीयता यानि न्यू

प्रोविंसियलिज़्म के रुझानों का बीजारोपण *राग दरबारी* में ही हो चुका था।

बलवीर अरोड़ा (चेयरमैन सेंटर फ़ॉर मल्टी लेबल फ़ेडरलिज़्म) ने अपने पर्चे में फ़ैक्ट और फ़िक्शन तथा सेंस और नॉनसेंस जैसे दो अलग-अलग विरोधाभासों की चर्चा की। इसके बाद उन्होंने कहा कि संघवाद और सेकुलरिज़म एक-दूसरे से संबंधित और संघीय संविधानवाद की आधारशिला बनाते हैं। न्याय इस पूरी प्रणाली में सेकुलरवाद की अवधारणा का हिस्सा है और इसी संदर्भ में *राग दरबारी* को देखे जाने की ज़रूरत है। पंजाब विश्वविद्यालय के विद्वान आशुतोष कुमार (पंजाब युनिवर्सिटी) ने 'हिंदी हार्टलैंड दैन ऐंड नाउ : रीडिंग *राग दरबारी* ' में कहा कि हम समाज-विज्ञान में साहित्य-राजनीति के संबंधों पर बहुत कम बात करते हैं। अत: यह आयोजन इस नज़रिये से एक श्रेष्ठ प्रयास है। उपन्यास और शिवपालगंज की पृष्ठभूमि को विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र किस तरह से कार्य करता है, उसकी क्या-क्या विशेषताएँ हैं— इन सब पर यह उपन्यास विस्तार से चर्चा करता है। इस लिहाज़ से शिवपालगंज में मौजूद ग़बन, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और वंशवाद लोकतंत्र के लिए एक चालक बल के रूप में कार्य करता है। लोकतंत्र का सिद्धांत, विरोधी का होना, गाँव में मौजूद सांस्कृतिक विविधता, पंचायत, चुनाव सभी को शिवपालगंज से जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी पट्टी राजनीतिक रूप से इसलिए अल्पविकसित रही है क्योंकि यहाँ राजनीति के माध्यम से लोगों को प्राप्त होने वाले संसाधन दरअसल नेता व अफ़सर की जेब में चली जाती है।

भोजन के बाद का सत्र ख़ासा लोकप्रिय रहा। इसमें '*राग दरबारी* : एडमिनिस्ट्रेशन, पॉलिटिक्स ऐंड चैलेंज फ़ॉर रिफ़ार्म' शीर्षक से गोलमेज़ चर्चा का आयोजन किया गया था। इस सत्र के दौरान विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) के अभय कुमार दुबे, टी.रघुनंदन (सेवानिवृत्त आईएएस), प्रियंका सिंह (सीईओ, सेवामंदिर) व दीपा बगई (सेवानिवृत्त आईएएस, यूएनडीपी) ने चर्चाएँ कीं। दीपा बगई ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'गाँव बदल रहा है परंतु उस बदलाव के बीच जो बेहतरी व तरक़्क़ी की उम्मीदें हैं वही आज के बदलते भारत के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है'। अभय कुमार दुबे ने गाँव में आने वाले बदलाव पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि 'देहात तेज़ी से बदल रहा है, इसका कारण केवल कोई सरकारी योजना या फिर वैश्वीकरण न हो कर ग्रामीण भारत में शुरू हुआ सामाजिक क्रांति या सामाजिक न्याय से जुड़ा आंदोलन भी है।' पहले जो जातियाँ वंचित-शोषित थीं, उन्हें अब आरक्षण का फ़ायदा मिला है और वे स्थानीय ग्रामीण राजनीति में प्रबलता से उभर कर सामने आयी हैं। इसी बात को बढ़ाते हुए प्रियंका सिंह ने कहा कि 'मैं अभयजी की बातों से सहमत हूँ, परंतु चिंता का विषय यह है कि हमारी मूल चीज़ नहीं बदली है। सत्ता का केवल स्वरूप बदला है, परंतु सत्ता का दुरुपयोग अभी भी चल रहा है। पहले सत्ता ब्राह्मण-राजपूत के हाथ में थी बाद में यह अहीर-यादव के हाथ में आ गयी। उन्होंने एक और सवाल की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा कि इसके आगे का क्या रास्ता होगा?' इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए शैलजा फ़िनेल ने कहा कि 'ग्रामीण स्तर में जो बदलाव आ रहे हैं, परम्परागत स्थानीयता का जो प्रयोग हो रहा है, चाहे वह स्वास्थ्य की दिशा में हो, कुटीर उद्योग, खेती-बाड़ी के दिशा में हो, वह बहुत सकारात्मक पक्ष है यह ग्रामीण-शहरी संबंध की दिशा भी बदल रहा है'। टी. रघुनंदन ने पूरी व्यवस्था में नौकरशाही के स्वरूप को रेखांकित करते हुए कहा कि नौकरशाही आज उच्चस्तर पर ग़ैर-क्रियात्मक हो गयी है। भारतीय प्रशासनिक सेवा उन संस्थाओं में से एक है जिसमें सबसे कम सुधार हुआ है। ऐसे में पूरी व्यवस्था में जवाबदेही कैसे तय की जाए— इसे समझाने के लिए रघुनंदन ने 'पैसा फ़ॉर पंचायत' नामक जवाबदेही से जुड़े प्रयास का हवाला दिया।